मूल्यांकन का शिक्षा में महत्व → यदि हम शिक्षा को एक वैज्ञानिक प्रक्रिया बनाना चाहते हैं तो हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। वर्तमान शिक्षण- विधियों एवं पाठ्यक्रम को वैज्ञानिक ढंग से परिमार्जित करना होगा और वह वैज्ञानिक ढंग है- परिणामों के ज्ञान के आधार पर वर्तमान क्रिया कलापों में परिवर्तन। दुर्भाग्यवश शिक्षा के क्षेत्र में जितना उत्साह उद्देश्यों के निर्धारण में और पाठ्यक्रम निर्माण में बताया जाता है उतना परिणामों को जानने में नहीं बताया जाता। शिक्षा के स्वरूप परिणाम क्या प्राप्त हो रहे हैं इस ओर यदि हम ध्यान दें तो कदाचित शिक्षा के स्तर में बहुत कुछ सुधार किया जा सकता है।

परिणामों के ज्ञान की ओर उदासीनता बताना वैसा ही होगा जैसाकि हम एक भवन निर्माण के लिए सामग्री, श्रम एवं धन व्यय करें और यह न देखें की आखिर यह भवन कैसा बना है, क्या यह हमारी अपेक्षा के अनुकूल है, क्या जितनी पूँजी इसमें लगी है उसके अनुरूप ही प्रतीत होता है।

इसी परिणामों को जानने के पक्ष को लेकर शिक्षा में मूल्यांकन की नवीन विचारधारा ने जन्म लिया है मूल्यांकन विशेषज्ञों का कहना है कि मूल्यांकन सम्पूर्ण शैक्षिक- प्रक्रिया में परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली न तो वैध है न ही विश्वसनीय। अतः इसे भविष्य की योजना का आधार नहीं बनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया →

शैक्षिक मूल्यांकन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसके तीन महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं -

(i) शिक्षण उद्देश्य

(ii) अधिगम अनुभव

(iii) मूल्यांकन के उपकरण या व्यवहार परिवर्तन

उपरोक्त तीनों पक्ष आपस में एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं, इसलिए ये तीनों पक्ष आपस में घनिष्ठ रूप से भी सम्बंधित है। इस प्रक्रिया को निम्न चित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है:-

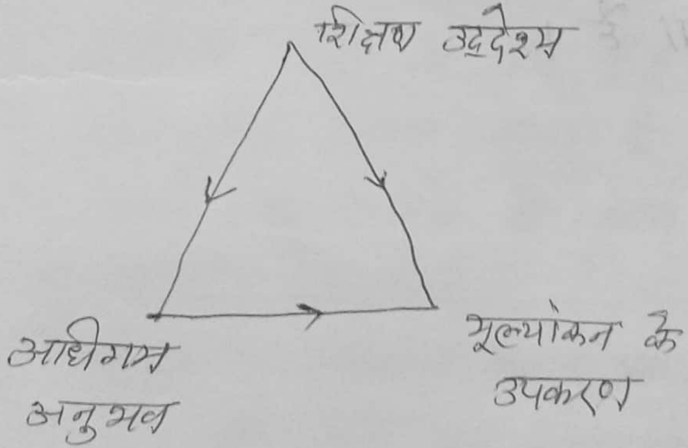

उपर्युक्त त्रिभुज के तीनों बिन्दुओं पर शिक्षण उद्देश्य, अधिगम अनुभव व मूल्यांकन या व्यवहार परिवर्तन स्थित होते हैं अतः बालक के व्यवहार परिवर्तन का सीधा संबंध उद्देश्य तथा अधिगम अनुभवों से है।

डा० पटेल ने चार बिन्दुओं के आधार पर मूल्यांकन प्रक्रिया की व्याख्या की है जो कि निम्न है-

Scanned with CamScanner

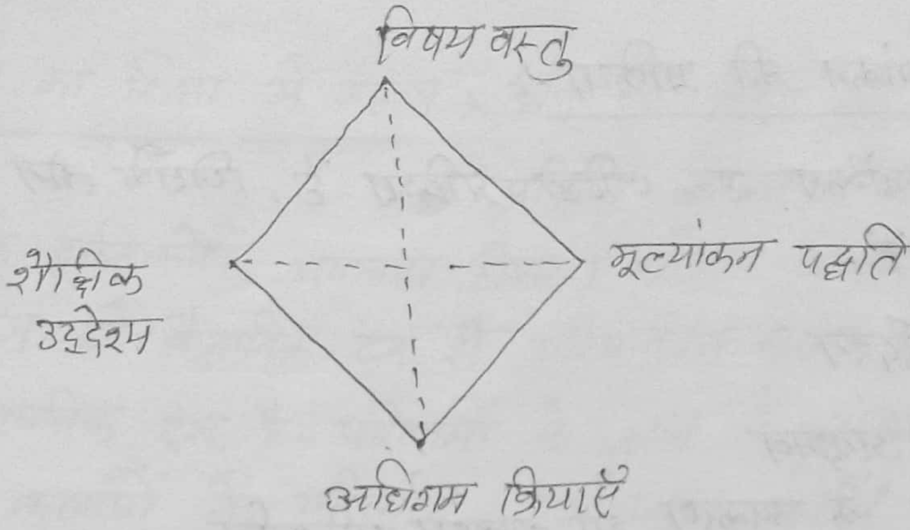

मूल्यांकन प्रक्रिया में शैक्षिक उद्देश्य, विषयवस्तु, अधिगम क्रियाएँ एवं मूल्यांकन पद्धति पारस्परिक रूप से सम्बंधित रहती है तथा इन चारों में से प्रत्येक पहलू अन्य तीनों पहलुओं पर निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

मूल्यांकन प्रक्रिया के सोपान → इसके निम्न सोपान हैं-

(1) उद्देश्यों का चयन → शिक्षण उद्देश्य शिक्षण को दिशा प्रदान करते हैं, अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इनका चयन भली भाँति किया जाना चाहिए। अतः उद्देश्यों का चयन करते समय बालकों की रुचियों, योग्यताओं एवं आवश्यकताओं, व्यक्तित्व के पक्षों, ग्रहण करने की क्षमता आदि को ध्यान रखा जाना चाहिए। शैक्षिक उद्देश्यों को निश्चित करते समय बालक, समाज, विषय-वस्तु की प्रकृति, सीखने की विधि, शिक्षा का स्तर आदि सभी का ध्यान रखा जाना चाहिए।

(2) उद्देश्यों को व्यवहार परिवर्तन के रूप में लिखना →

उद्देश्यों को चयनित करने के बाद उन्हें व्यक्तिगत परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है। कोई भी शिक्षण उद्देश्य केवल उसी समय तक सार्थक है। जब उसे पूर्ण रूप से परिभाषित कर दिया जाता है।

व्यवहारगत परिवर्तन निम्न प्रकार से हो सकते हैं-

(i) छात्र विभिन्न तत्वों के नामों का प्रत्यास्मरण कर सकेगा।

(ii) छात्र उसके गुणों के आधार पर पहचान कर सकेगा।

(iii) छात्र दैनिक जीवन में उपयोग कर सकेगा।

(iv) बालक घर पर स्वयं बना सकेगा।

अधिगम परिस्थितियों की पहचान → उद्देश्यों को व्यवहारगत परिवर्तन के रूप में परिभाषित करने के बाद एक मूल्यांकनकर्ता को उन अधिगम परिस्थितियों की पहचान भी करनी चाहिए जिनमें बालक का अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन हुआ है। मूल्यांकन करते समय भी

Scanned with CamScanner

बालक को ऐसी परिस्थिति में रखा जाना चाहिए जिससे कि वह वांछित व्यवहार ~~करके समझ~~ को अभिव्यक्ति कर सके।

(4) परीक्षणों का चुनाव → विद्यार्थियों में हुए व्यवहारगत परिवर्तनों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक को ऐसी प्रविधियों एवं परीक्षणों का निर्माण करना चाहिए जो व्यावहारिक परिवर्तनों के सम्बंधों में साक्षियाँ प्रस्तुत कर सकें। इस कार्य हेतु अध्यापक को बहुत ही सूझबूझ व समझदारी से काम लेना चाहिए। उसे यह निश्चित करना चाहिए कि क्या यह प्रविधि वही मूल्यांकन कार्य करेगी जिसे मैं चाहता हूँ। निर्मित प्रविधि कौन-2 से उद्देश्यों की जाँच कर रही है। प्रयोग में ली जाने वाली प्रविधि को छात्र सरलता से समझ सकेंगे।

(5) प्रविधि का प्रयोग एवं प्रमाणों का लेखा → मूल्यांकनकर्ता किसी भी प्रविधि का प्रयोग विद्यार्थियों पर मूल्यांकन हेतु करें, तो विद्यार्थियों द्वारा दिये गये प्रत्युत्तरों या व्यवहार-प्रदर्शन का लिखित लेखा-जोखा तैयार कर लेना चाहिए। लेकिन यदि परीक्षा लिखित रूप में ली जाती है तो ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होगी। लेकिन यदि अलिखित परीक्षा से साक्षात्कार, निरीक्षण आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जाए तब शिक्षक को बालक की समस्त प्रक्रियाओं को अंकित कर लेना चाहिए।

Scanned with CamScanner

⑥ प्राप्त प्रमाणों की व्याख्या → समस्त प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर शिक्षक को यह निर्णय लेना चाहिए कि विद्यार्थी में हुए व्यवहार परिवर्तन शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार है या नहीं। यदि है तो किस सीमा तक है या कौन 2 से उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो पाई। इन समस्त बातों की व्याख्या शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा दिये उत्तरों के आधार पर करता है। इसी प्रकार विद्यार्थी ने अगर किसी विषय में अंक प्राप्त किये है तो केवल अंक उसके भविष्य के लिए ठोस आधार प्रस्तुत नहीं करते जब तक कि उसके अंकों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं किया जाये।

इसके लिए निम्नांकित बातों के आधार पर तुलना करनी होगी:-

(i) समूह में निम्नतम एवं उच्चतम प्राप्तांक क्या है?

(ii) समूह के सभी बालकों के प्राप्तांकों का औसत क्या है?

(iii) अमुक विद्यार्थी की स्थिति क्या है तथा क्या उसने अपनी पूर्व स्थिति से कुछ बढ़िया प्रदर्शित किया है?

उपर्युक्त आधार पर प्राप्त परिणामों की व्याख्या की जानी चाहिए तथा परीक्षाफल को इस ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी की कमजोरियों व उपलब्धियों की सही जानकारी मिल सके।

Scanned with CamScanner